राजभाषा

राजकीय कार्य संचालन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा ही "राजभाषा" कहलाती है। प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र भाषा ही प्रायः उसकी "राजभाषा" कहलाती है क्योंकि उसी के माध्यम से वहाँ का राजकाज सम्पन्न होता है।

दरअसल राजकीय कार्यालयों, लेखों और पत्र-व्यवहार के साथ-साथ राजाज्ञाएँ जिस भाषा में प्रसारित होती है वही भाषा राजभाषा कहलाती है। प्राचीन काल से लेकर आज तक हिन्दी को भारत की जनता का प्रेम प्राप्त रहा है।

सर्वप्रथम हिन्दी बोलचाल की भाषा थी फिर वह साहित्य की भाषा बनी। आजादी-प्राप्ति के बाद हिन्दी भारत की राजभाषा घोषित की गई तथा उसका न्यूनाधिक प्रयोग कार्यालयों में होने लगा। फलतः राजभाषा का एक अलग रूप विकसित हुआ। राजभाषा के रूप में हिन्दी के स्वरूप की मुख्य विशेषताएँ ही उसे हिन्दी के अन्य रूपों से अलग करती हैं,

(i) अर्थ की दृष्टि से शब्द की तीनों ही शक्तियाँ हिन्दी में व्यवहृत होती हैं किन्तु राजभाषा या कार्यालयी भाषा में अधिकाधिक अभिधा का ही प्रयोग होता है।

(ii) साहित्यिक हिन्दी में शब्द-स्तर पर या वाक्य-स्तर पर एकाधिकार्थता अच्छी मानी जाती है। किन्तु राजभाषा हिन्दी में सभी स्तरों पर एकार्थता ही काम्य होती है।

(iii) हिन्दी की अन्य प्रयुक्तियों से राजभाषा अपने पारिभाषिक शब्दों में भी स्पष्टतः अलग है। अन्य प्रयुक्तियों में वे कभी प्रयुक्त होते भी हैं तो इसी से लेकर, यथा- आयुक्त निविदा आदि।

हिन्दी जब भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा मान ली गयी तब मुट्ठीभर राजनीतिक स्वार्थियों ने कहना आरम्भ किया कि हिन्दी को महत्व देने से अन्य भारतीय भाषाएँ उपेक्षित हो जाती हैं, हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने से "हिन्दी साम्राज्यवाद" का बोलबाला हो जायेगा। जो नेता हिन्दी का व्यवहार न करने के कारण लोगों को जेल भिजवाते थे, वे आज हिन्दी के विरोध में झण्डा उठा रहे हैं।

किन्तु, उन्हें यह समझना चाहिए कि हमारे राष्ट्र-निर्माताओं ने बहुत सोच-समझकर "स्वार्थ का चश्मा लगाये बिना, हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया था। महात्मा गाँधी ने कहा था – "अगर हम भारत को राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है। अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है, लेकिन वह हमारी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती।"

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का कहना था– "प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी के प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती। यदि हम लोगों ने तन-मन धन से प्रयत्न किया तो वह दिन दूर नहीं जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी हिन्दी।"

सभी भाषा के समर्थक विद्वान (क) शंकर दयाल सिंह
(ख) आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा

बाल
1.7.17